अध्याय 13: पहलवान की ढोलक

विषय-सूची

2 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 13.1	पाठ के साथ	9 प्रश्न
प्रश्नावली 13.2	भाषा की बात	2 प्रश्न

प्रश्नावली 13.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

हल

ढोल और दाँव-पेंच का तालमेल:

लुट्टन की कुश्ती के दौरान ढोल की विभिन्न तालें उसे अलग-अलग संदेश देती थीं और वह उसी के अनुसार अपने दाँव-पेंच बदलता था।

'चट्-धा, गिड़-धा, चट्-धा, गिड़-धा' — इसका अर्थ था 'आ जा भिड़ जा, आ जा भिड़ जा' — यह लुट्टन को प्रतिद्वंद्वी से भिड़ने के लिए ललकारती थी।

'चटाक्-चट्-धा, चटाक्-चट्-धा' — इसका अर्थ था 'उठाकर पटक दे, उठाकर पटक दे' — यह उसे प्रतिद्वंद्वी को पटकने की प्रेरणा देती थी।

'ढाक्-ढिना, ढाव-ढिना' — इसका अर्थ था 'वाह पट्ठे! वाह पट्ठे!!' — यह उसकी प्रशंसा करती थी।

'चट्-गिड़-धा, चट्-गिड़-धा' — इसका अर्थ था 'मत डरना, मत डरना' — यह साहस बंधाती थी।

'धाक-धिना, तिरकट-तिना' — इसका अर्थ था 'दाँव काटो, बाहर हो जा' — यह संकट से उबरने का संकेत था।

'धिना-धिना, धिक-धिना' — इसका अर्थ था 'चित करो, चित करो' — यह प्रतिद्वंद्वी को चित करने का आदेश था।

'धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़' — इसका अर्थ था 'वाह बहादुर! वाह बहादुर!!' — यह विजय की घोषणा थी।

ध्वन्यात्मक शब्दों से उत्पन्न ध्वनि-अनुभव:

ये ध्वन्यात्मक शब्द — चट्-धा, गिड़-धा, चटाक्, ढाक्-ढिना, धिक-धिना, धा-गिड़-गिड़ — मन में कुश्ती के अखाड़े की जीवंत तस्वीर खींचते हैं।

इनसे थाप, धमाका, पटकने की आवाज, ताल और लय का अनुभव होता है।

ये शब्द पाठक के मन में भी वैसी ही उत्तेजना, स्फूर्ति और जोश भर देते हैं जो लुट्टन को कुश्ती के मैदान में भरते थे।

उत्तर: ढोल की प्रत्येक ताल लुट्टन को एक विशेष दाँव का संकेत देती थी — 'आ जा भिड़ जा', 'उठाकर पटक दे', 'दाँव काटो', 'चित करो' आदि। ध्वन्यात्मक शब्द जैसे चट्-धा, गिड़-धा, धाक्-ढिना मन में कुश्ती के अखाड़े की धमाकेदार, उत्तेजक और जोशीली ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

प्रश्न 2

कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

हल

पहला मोड़ — बचपन में माता-पिता की मृत्यु:
लुट्टन नौ वर्ष की उम्र में अनाथ हो गया। सास ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। इसने उसमें स्वाभिमान और जिद्दी स्वभाव जगाया — गाँव के लोग सास को तकलीफ देते थे, इसी से उसमें कसरत और पहलवानी की धुन सवार हुई।

दूसरा मोड़ — श्यामनगर दंगल में 'शेर के बच्चे' को चुनौती:
लुट्टन ने बिना किसी अनुभव के प्रसिद्ध पंजाबी पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे दी और उसे पटककर जीत गया। इससे वह एक साधारण गाँव के लड़के से राज-पहलवान बन गया और राजा श्यामानंद के दरबार में स्थायी जगह मिल गई।

तीसरा मोड़ — राज-दरबार में स्थायित्व:
राजा साहब की संरक्षण में पौष्टिक भोजन, व्यायाम और सम्मान मिला। वह जिले भर में प्रसिद्ध हो गया, सभी नामी पहलवानों को हराया और उसके दोनों बेटे भी भावी राज-पहलवान घोषित हो गए।

चौथा मोड़ — नए राजकुमार का आगमन और दरबार से निष्कासन:
वृद्ध राजा के निधन के बाद नए राजकुमार ने दंगल की परंपरा बंद कर घुड़दौड़ को प्राथमिकता दी। लुट्टन को दरबार से निकाल दिया गया। वह अपने दोनों बेटों के साथ गाँव लौट आया और झोंपड़ी में रहने लगा।

पाँचवाँ मोड़ — महामारी और बेटों की मृत्यु:
गाँव में अनावृष्टि, मलेरिया और हैजे ने तबाही मचाई। पहले दोनों बेटे काल का ग्रास बने। इस असह्य आघात के बावजूद लुट्टन ने ढोल बजाना बंद नहीं किया — वह गाँव को जीने की प्रेरणा देता रहा।

अंतिम मोड़ — पहलवान की मृत्यु:
एक रात ढोलक की आवाज बंद हो गई। प्रातःकाल शिष्यों ने देखा — पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। जो जिंदगी भर 'चित' नहीं हुआ, वह अंत में महामारी के सामने 'चित' हो गया।

उत्तर: लुट्टन के जीवन में प्रमुख परिवर्तन: बचपन में अनाथ होना → श्यामनगर दंगल में शेर के बच्चे को हराकर राज-पहलवान बनना → नए राजकुमार द्वारा दरबार से निकाला जाना → गाँव में महामारी और बेटों की मृत्यु → स्वयं की मृत्यु। हर मोड़ पर वह गिरा, पर जीवट नहीं टूटी।

प्रश्न 3

लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

हल

लुट्टन के जीवन में ढोल की भूमिका एक सच्चे गुरु से भी बड़ी रही:

प्रेरणा का स्रोत: बचपन से ही जब भी लुट्टन कुश्ती देखने जाता या दंगल में उतरता, ढोल की ताल ही उसे उत्साहित और प्रेरित करती थी। श्यामनगर दंगल में जब राजमत और बहुमत चाँद सिंह के पक्ष में था, तब केवल ढोल की आवाज ही लुट्टन के पक्ष में थी।

दाँव-पेंच का मार्गदर्शन: ढोल की अलग-अलग तालें उसे युद्ध के मैदान में दाँव-पेंच का संकेत देती थीं — कब भिड़ना है, कब दाँव काटना है, कब पटकना है। बिना शब्दों के ढोल उसका सच्चा मार्गदर्शक था।

जीवन-संगी: ढोलक केवल कुश्ती तक सीमित नहीं रही। पूरे जीवन में — राज-दरबार में, गाँव लौटने पर, शिष्यों को सिखाते हुए, और अंत में महामारी की रात में — ढोल उसके साथ रहा।

आत्मशक्ति का प्रतीक: लुट्टन का मानना था कि ढोल की आवाज में एक जादुई शक्ति है जो शरीर और मन में बिजली भर देती है। ढोल ने ही उसे 'लुट्टन' से 'लुट्टन सिंह राज-पहलवान' बनाया।

इसीलिए उसने अपने बेटों को भी सिखाया: 'दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना।'

उत्तर: ढोल ने लुट्टन को प्रेरणा, दाँव-पेंच का मार्गदर्शन और जीवनभर शक्ति दी। श्यामनगर दंगल से लेकर अंतिम दिनों तक ढोल उसका सच्चा साथी रहा। कोई मनुष्य-गुरु उसे नहीं मिला, ढोल ही उसका सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक था।

प्रश्न 4

गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

हल

लुट्टन का ढोल बजाते रहना उसके गहरे जीवट और निःस्वार्थ समर्पण का प्रमाण था:

गाँव को संजीवनी देना: महामारी से मर रहे गाँव के लोगों में ढोल की आवाज संजीवनी शक्ति भरती थी। अर्द्धमृत, औषधि-विहीन प्राणियों की शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था और स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी।

मृत्यु-भय दूर करना: ढोल की आवाज से मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, वे मृत्यु से नहीं डरते थे।

बेटों की मृत्यु के बाद भी: जिस रात दोनों बेटे मर गए, उसके अगले दिन भी पहलवान ने ढोल बजाया। संतप्त पिता-माताओं ने कहा — 'दोनों पहलवान बेटे मर गए, पर पहलवान की हिम्मत तो देखो, डेढ़ हाथ का कलेजा है!' — लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई।

पहलवान का स्वभाव: लुट्टन के लिए ढोल बजाना सिर्फ शौक नहीं, जीने का ढंग था। जैसे पहलवान कभी 'चित' नहीं होता, वैसे ही वह हार नहीं मानता था — यह उसका जीवन-दर्शन था।

रात्रि की विभीषिका को चुनौती: कहानी में कहा गया है — 'रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी।' वह अँधेरे और मृत्यु को ललकारता रहा।

उत्तर: लुट्टन इसलिए ढोल बजाता रहा क्योंकि उसकी आवाज महामारी से मर रहे गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी, लोगों को मृत्यु-भय से मुक्त करती थी और जीने की प्रेरणा देती थी। बेटों की मृत्यु के बाद भी उसने हार नहीं मानी — यही उसका जीवट था।

प्रश्न 5

ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

हल

ढोलक की आवाज का गाँव पर बहुआयामी और गहरा असर होता था:

संजीवनी शक्ति: 'यही आवाज मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी।' बीमारी और भूख से टूटे हुए लोगों को यह आवाज जीने की ताकत देती थी।

दंगल का दृश्य: बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था — वे अपनी पीड़ा भूलकर मानसिक रूप से दंगल में पहुँच जाते थे।

स्नायुओं में बिजली: स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी — शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता था।

मृत्यु-भय से मुक्ति: ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का गुण था और न महामारी रोकने की शक्ति, पर मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी — वे मृत्यु से नहीं डरते थे।

रात की भीषणता को चुनौती: रात्रि की विभीषिका को केवल पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी — यह रात के भय और सन्नाटे के विरुद्ध एक जीवित आवाज थी।

हिम्मत बढ़ाना: जब लुट्टन के बेटे मरने के बाद भी ढोल बजा, तो लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई।

उत्तर: ढोलक की आवाज महामारीग्रस्त गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी — लोगों की शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता, स्नायुओं में बिजली दौड़ती और मृत्यु-भय दूर होता था। यह रात की भीषणता को ललकारती और गाँव की हिम्मत बनाए रखती थी।

प्रश्न 6

महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

हल

सूर्योदय का दृश्य:
दिन में — कलरव, हाहाकार तथा हृदय-विदारक रुदन के बावजूद — लोगों के चेहरे पर कुछ प्रभा दिखती थी।
सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूँखते-कराहते अपने-अपने घरों से बाहर निकलते थे।
वे अपने पड़ोसियों और आत्मीयों को ढाढ़स देते थे — 'अरे क्या करोगी रोकर, दुलहिन! जो गया सो तो चला गया...' या 'भैया! घर में मुर्दा रखके कब तक रोओगे?'
अर्थात् सूर्य के प्रकाश में कुछ हिम्मत और सामाजिकता बची रहती थी।

सूर्यास्त का दृश्य:
सूर्यास्त होते ही लोग अपनी-अपनी झोंपड़ियों में घुस जाते और चूँ तक नहीं करते थे।
उनकी बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी।
पास में दम तोड़ते हुए पुत्र को अंतिम बार 'बेटा!' कहकर पुकारने की भी हिम्मत माताओं में नहीं होती थी।
रात की विभीषिका को केवल पहलवान की ढोलक ही ललकारती थी।

सार: दिन में सूर्य के प्रकाश में थोड़ी हिम्मत और बोलने की शक्ति बची रहती थी, पर रात होते ही भय, असहायता और निस्तब्धता का साम्राज्य छा जाता था।

उत्तर: सूर्योदय पर लोग कराहते हुए भी बाहर निकलकर एक-दूसरे को ढाढ़स देते थे; सूर्यास्त होते ही वे झोंपड़ियों में बंद हो जाते, बोलने की शक्ति खो देते और मरते हुए परिजन को 'बेटा!' पुकारने की हिम्मत भी नहीं रहती। दिन में थोड़ी जिजीविषा, रात को घोर निस्तब्धता।

प्रश्न 7

कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था— (क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है? (ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है? (ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

हल

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?
कहानी में ही संकेत है — नए राजकुमार ने दंगल की जगह घुड़दौड़ को प्राथमिकता दी।
आधुनिकता और पश्चिमी प्रभाव के कारण लोगों की रुचि और प्राथमिकताएँ बदल गईं।
राजाओं का संरक्षण समाप्त होने से पहलवानों को प्रोत्साहन और आर्थिक सहयोग नहीं मिला।
शहरीकरण और आर्थिक दबाव ने ग्रामीण लोककलाओं और खेलों को हाशिए पर धकेल दिया।
टेलीविजन और मीडिया ने क्रिकेट जैसे खेलों को अधिक प्रचारित किया।

(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?
क्रिकेट आज सबसे लोकप्रिय खेल बन गया है और इसे सर्वाधिक संरक्षण और मीडिया कवरेज मिलती है।
फुटबॉल, बैडमिंटन, हॉकी, और कबड्डी भी लोकप्रिय हैं।
IPL जैसी व्यावसायिक लीगों ने क्रिकेट को मनोरंजन उद्योग का अंग बना दिया।

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?
सरकार और राज्य खेल संघों द्वारा कुश्ती अकादमियाँ और अखाड़े स्थापित किए जाएँ।
ग्रामीण क्षेत्रों में दंगल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ और विजेताओं को पुरस्कृत किया जाए।
कुश्ती की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का मीडिया में व्यापक प्रचार-प्रसार हो।
ओलंपिक में पदक जीतने वाले भारतीय पहलवानों (जैसे सुशील कुमार, बजरंग पुनिया, साक्षी मलिक) को प्रेरणा-पुंज के रूप में प्रस्तुत किया जाए।
स्कूली पाठ्यक्रम में कुश्ती को शामिल किया जाए।

उत्तर: (क) राजाओं का संरक्षण समाप्त, पश्चिमी खेलों का प्रभाव और शहरीकरण के कारण कुश्ती उपेक्षित हुई। (ख) क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन ने जगह ली। (ग) सरकारी अकादमियाँ, ग्रामीण दंगल, मीडिया प्रचार और स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने से कुश्ती को पुनः लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

प्रश्न 8

आशय स्पष्ट करें— आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

हल

यह पंक्ति कहानी के आरंभ में रात्रि के वातावरण का वर्णन करती है।

प्रत्यक्ष अर्थ:
रात के आकाश में तारे चमकते हैं, पर पृथ्वी पर घोर अंधकार है।
यदि कोई तारा टूटकर पृथ्वी पर आना चाहे, तो उसकी ज्योति और शक्ति वायुमंडल में ही समाप्त हो जाती है।
अन्य तारे उस टूटते तारे की भावुकता और विफलता पर हँसते हैं।

लाक्षणिक/व्यंग्यात्मक अर्थ:
यह पंक्ति गाँव की दयनीय स्थिति का प्रतीकात्मक वर्णन है — पृथ्वी (गाँव) पर जो पीड़ा और मृत्यु का वातावरण है, उसे देखकर कोई सहायता करने की इच्छा रखे तो भी वह असहाय है।
यह व्यवस्था की निर्दयता और संवेदनहीनता पर व्यंग्य है — जो भावुक होकर मदद करना चाहता है, उसे व्यवस्था (अन्य तारे) उपहास से देखती है।
यह उन लोगों और शासकों की संवेदनहीनता का प्रतीक है जो ऊपर से देखते रहते हैं पर नीचे उतरकर पीड़ितों की मदद नहीं करते।

प्रकृति का मानवीकरण:
तारे को 'भावुक' कहना, ज्योति और शक्ति का 'शेष' होना, और अन्य तारों का 'खिलखिलाकर हँसना' — ये सब प्रकृति के मानवीकरण के उदाहरण हैं।
इससे रात की निर्दयता और गाँव की असहायता और गहराई से उभरती है।

उत्तर: इस पंक्ति का आशय है कि महामारीग्रस्त गाँव की पीड़ा को देखकर कोई मदद करना चाहे तो भी व्यवस्था उसे असहाय बना देती है। यह व्यवस्था और शासकों की संवेदनहीनता पर व्यंग्य है। साथ ही यह प्रकृति के मानवीकरण का सुंदर उदाहरण है जो रात की भीषणता को और गहरा बनाता है।

प्रश्न 9

पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

हल

पाठ में प्रकृति के मानवीकरण के प्रमुख अंश और उनके आशय:

1. 'अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।'
आशय: रात को एक दुखी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है जो गाँव की पीड़ा पर रो रही है। इससे रात का वातावरण केवल भौतिक नहीं, भावनात्मक भी बन जाता है।

2. 'निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।'
आशय: निस्तब्धता (मौन) को एक संवेदनशील प्राणी के रूप में दिखाया गया है जो गाँव की चीखों को छिपाने की कोशिश करता है। यह गाँव की असहायता और भीतर दबी पीड़ा का प्रतीक है।

3. 'आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।'

आशय: तारों को भावनाशील मनुष्यों के रूप में दिखाया गया है — एक संवेदनशील, दूसरे संवेदनहीन। यह व्यवस्था की निर्दयता का प्रतीक है।

4. 'रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को, ताल ठोककर, ललकारती रहती थी — सिर्फ पहलवान की ढोलक!'
आशय: रात्रि को एक शत्रु के रूप में चित्रित किया गया है जो अपनी भीषणताओं के साथ आगे बढ़ती है, और पहलवान की ढोलक एक वीर योद्धा की तरह उसे ललकारती है।

5. 'गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था।'
आशय: पूरे गाँव को एक डरे हुए बच्चे के रूप में दिखाया गया है जो महामारी के सामने असहाय है। यह उपमा गाँव की निर्बलता और भय को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है।

उत्तर: पाठ में 'अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहाती', 'निस्तब्धता सिसकियाँ दबाती', 'भावुक तारा टूटता', 'रात्रि ललकारती', 'गाँव शिशु-सा काँपता' — इन अंशों में प्रकृति को मानवीय भावनाओं और क्रियाओं से युक्त दिखाया गया है, जिससे महामारी की भीषणता और गाँव की पीड़ा अत्यंत जीवंत और मार्मिक रूप में उभरती है।

प्रश्नावली 13.2 — भाषा की बात

प्रश्न 1

हर विषय, क्षेत्र, परिवेश आदि के कुछ विशिष्ट शब्द होते हैं। पाठ में कुश्ती से जुड़ी शब्दावली का बहुतायत प्रयोग हुआ है। उन शब्दों की सूची बनाइए। साथ ही नीचे दिए गए क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कोई पाँच-पाँच शब्द बताइए— चिकित्सा, क्रिकेट, न्यायालय।

हल

कुश्ती से जुड़ी शब्दावली (पाठ से):
दंगल, कुश्ती, दाँव-पेंच, लँगोट, जाँघिया, अखाड़ा, चित (चारों खाने चित), पटकना, ताल ठोकना, लंगोट लगाना, पहलवान, राज-पहलवान, पट्ठे, जोड़ी, प्रतिद्वंद्वी, बाज की तरह टूट पड़ना, दाँव काटना, केहुनी, पकड़, पैंतरा, मैदान।

चिकित्सा क्षेत्र के पाँच शब्द:
1. निदान (diagnosis)
2. शल्य-चिकित्सा (surgery)
3. औषधि (medicine)
4. रोगी (patient)
5. उपचार (treatment)

क्रिकेट क्षेत्र के पाँच शब्द:
1. पिच (pitch)
2. विकेट (wicket)
3. बल्लेबाज (batsman)
4. गेंदबाज (bowler)
5. ओवर (over)

न्यायालय क्षेत्र के पाँच शब्द:
1. वादी (plaintiff)
2. प्रतिवादी (defendant)
3. अभियोजन (prosecution)
4. साक्ष्य (evidence)
5. फैसला / निर्णय (verdict)

उत्तर: पाठ की कुश्ती-शब्दावली: दंगल, दाँव-पेंच, लँगोट, चित, पटकना, पहलवान, पैंतरा, जोड़ी, ताल ठोकना, दाँव काटना आदि। चिकित्सा: निदान, शल्य-चिकित्सा, औषधि, रोगी, उपचार। क्रिकेट: पिच, विकेट, बल्लेबाज, गेंदबाज, ओवर। न्यायालय: वादी, प्रतिवादी, अभियोजन, साक्ष्य, निर्णय।

प्रश्न 2

जैसे क्रिकेट की कमेंट्री की जाती है वैसे ही इसमें कुश्ती की कमेंट्री की गई है? आपको दोनों में क्या समानता और अंतर दिखाई पड़ता है?

हल

समानता:

दोनों में खेल के हर पल की जीवंत, चलती-फिरती झाँकी प्रस्तुत की जाती है।

दोनों में दर्शकों की प्रतिक्रिया और उत्तेजना का वर्णन होता है।

दोनों में खिलाड़ी की हर हरकत — आक्रमण, बचाव, जीत, हार — को तत्काल शब्दों में उतारा जाता है।

दोनों में भाषा जोशीली, उत्साहवर्धक और गतिशील होती है।

दोनों में शब्द-चित्र इतने सजीव होते हैं कि पाठक/श्रोता स्वयं मैदान में उपस्थित महसूस करता है।

अंतर:

क्रिकेट कमेंट्री शब्दों में होती है और सीधे कान तक पहुँचती है, जबकि इस कहानी में कुश्ती की कमेंट्री ढोल की तालों के माध्यम से होती है — 'चट्-धा, गिड़-धा' जैसे ध्वन्यात्मक शब्दों से।

क्रिकेट कमेंट्री विश्लेषणात्मक और विवरणात्मक होती है; यहाँ ढोल और पाठक-कथाकार की भाषा से भावनात्मक और संगीतात्मक कमेंट्री होती है।

क्रिकेट कमेंट्री में कमेंटेटर तटस्थ होता है; यहाँ ढोल लुट्टन का पक्षधर है और उसे संदेश व प्रेरणा भी देता है।

क्रिकेट कमेंट्री में तकनीकी शब्दावली होती है; यहाँ लोक-भाषा, ध्वन्यानुकरण और आंचलिक प्रयोग हैं।

क्रिकेट में कमेंट्री और खेल अलग-अलग हैं; यहाँ ढोल की कमेंट्री और खेल एक-दूसरे में घुले-मिले हैं — ढोल ही कमेंटेटर भी है और मार्गदर्शक भी।

उत्तर: समानता: दोनों में जीवंत, पल-पल का वर्णन, दर्शकों की प्रतिक्रिया और जोशीली भाषा है। अंतर: यहाँ कमेंट्री ढोल की तालों (ध्वन्यात्मक शब्द) से होती है जो लुट्टन को दाँव-पेंच के निर्देश भी देती है, जबकि क्रिकेट कमेंट्री केवल विवरणात्मक होती है।